उपलब्धि

69 उत्पादों के साथ यूपी देश का सबसे ज्यादा जीआई उत्पाद वाला प्रदेश

9 और जीआई उत्पादों को मंजूरी, तबला और करौंदा भी

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। काशी क्षेत्र में नौ और जीआई उत्पादों को मंजूरी मिल गई है। अब काशी क्षेत्र से कुल 32 जीआई उत्पाद हो चुके हैं। वहीं, 69 जीआई उत्पादों के साथ यूपी देश का पहला सबसे ज्यादा जीआई वाला प्रदेश बन गया। जीआई रजिस्ट्री चेन्नई के एप्लीकेशन स्टेटस से जानकारी मिलते ही हस्तशिल्पियों और उद्यमियों में खुशी छा गई।

जीआई विशेषज्ञ डॉ. रजनीकांत ने बताया कि वाराणसी क्षेत्र से 9 जीआई उत्पाद पंजीकृत हुए हैं। इसमें विश्वप्रसिद्ध बनारस की ठंडई, लाल पेड़ा के साथ ही संगीत वाद्ययंत्र बनारस शहनाई, बनारसी तबला, लाल भरवा मिर्च, चिरईगांव का करौंदा, जौनपुर की इमरती, बनारस की म्यूरल पेंटिंग और मूंज क्राफ्ट शामिल है। काशी क्षेत्र और पूर्वांचल के जिलों में कुल 32 जीआई उत्पाद देश की बौद्धिक संपदा अधिकार में शुमार हो गए, जो दुनिया के किसी भू-भाग में नहीं है। बनारस अब दुनिया में जीआई का हब और सर्वाधिक विविधता वाला जीआई शहर बन गया है। नौ साल पहले सिर्फ दो जीआई उत्पाद ही थे।

जीआई उत्पाद करौंदा।

जीआई उत्पाद तबला।

नौ साल पहले सिर्फ दो थे जीआई उत्पाद

2014 के पहले वाराणसी क्षेत्र से मात्र 2 जीआई उत्पाद बनारस ब्रोकेड व साड़ी और भदोही की कालीन को ही यह दर्जा प्राप्त था, लेकिन नौ वर्षों में यह संख्या 32 तक पहुंच गई।

मथुरा के सांझी क्रॉफ्ट को मिला टैग

मथुरा। मथुरा के प्रसिद्ध सांझी क्राफ्ट को जीआई टैग मिला है। शनिवार देर रात डीएम शैलेंद्र कुमार सिंह की ओर से इसकी घोषणा की गई। उन्होंने कहा कि ग्लोबल मार्केट में अब ब्रज की इस कला को अलग पहचान मिलेगी। कामगारों को इसका लाभ मिलेगा। ब्रज के लिए यह गर्व की बात है। डीएम शैलेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि सांझी सांझ, सज्जा, सजावट तथा राधारानी प्रेम की प्रतीत सांझी को भारत सरकार द्वारा जीआई टैग प्रदान किया गया। पुष्टिमार्गीय व बल्लभ कुल से संबंधित कला जो राधा-कृष्ण के प्रेम तथा लीलाओं की प्रतीक है। मोहन वर्मा एवं उनके परिवार की लगन आज सांझी को अपने एक नए रूप की तरफ परिवर्तित कर चुकी हैं। संवाद